दान की महिमा

- मान नाम हित किया दान तो अनर्थ और निस्सार रहा, पुण्य लक्ष्य से दान किया तो दान नहीं व्यापार रहा।
  पुण्य से कमाओ और पुण्य में लगाओ। पुण्य खरीद निज को भूला, अपना क्यों नुकसान करें॥
  अहं भाव से रहित दान कर, भगवत् पद आसान करें। (आत्मबोधशतक)
- जोड़-जोड़ के जो रखता है, उसके धन में जंग लगे,
  गाढ़-गाढ़ के जो रखता है, उसको सर्प भुजंग लगे।
  खाता-पीता जो रहता है, उसका धन तो अंग लगे,
  अपने धन का दान करे जो, भव भव में संग लगे।
  अत: कमाओं धर्म नीति से, खर्च रीतिसे धन करना,
  भोग भोगना सदा भीति से, दान प्रीति से सब करना। (अक्षय तृतीया पूजन)
- दान के आभूषण है आनंद के आंसू आना, शरीर रोमाञ्चित होना, बहुमान होना, प्रिय वचन बोलना और बाद में दान की अनुमोदना करना।
- दान के दूषण है अनादर पूर्वक देना, देरी करना, विकृत मुख बनाकरदेना, कठोर वचन बोलना, दान देकर पश्चाताप करना और दु:खी होना।
- स्व और पर के उपकार के लिए अपने धन का त्याग करना दान कहलाता है।
- कोई दानी है, कोई प्रिय बोलने वाले है किन्तु दानी और प्रिय बोलने वाले लाखों में भी दुर्लभ है।
- तुम्हारे जोड़े गये धन से समाज, देश, समूह का कल्याण हो, धर्म की प्रभावना हो, संस्कृति की रक्षा हो, राष्ट्र का उत्थान हो और मानवता की सेवा हो।
- हमारे देश में त्यागी की पूजा होती है और दानी की प्रशंसा।
- याचना करने पर देने से सौ गुना पुण्य होता है। बिना मांगे देने पर लाख गुना पुण्य होता है। गुप्त दान देने से करोड़ गुना पुण्य होता है।
- भवन बनाने वाला शिल्पी जिस प्रकार ऊपर उठता जाता है इसी प्रकार दान देने वाला ऊपर उठता जाता है।
- गृहस्थाश्रम में सिवाय दान के दूसरा कोई कल्याण करने वाला नहीं है।
- जो विभूति का उपयोग पूजा, शास्त्र, मंदिर, पाठशाला, जिनवाणी रक्षण में करता है भाग्यशाली होता है।
- योग्य संपदा को पाकर जो दान नहीं देता है उस मनुष्य को मिली हुई संपदा किसी काम की नहीं।
- उदार का धन तो दान आदि कार्यों में खर्च होता है और कृपण का एक जगह रखा ही रहता है।
- जो जिनमंदिर बनाने के लिए अथवा मंदिर जीर्णोद्धार, मंदिर की सुदंरता के लिए भूमि, धन, स्वर्ण, चाँदी, धन देता है वह जैनधर्म का रक्षक होता है।
- धन की सफलता दान में, देह की सफलता तत्व के चिंतन में ही है।
- खजुराहो में जैन मंदिर की प्रशस्ति में लिखा है कि जो इस मंदिर की पूजन आदि की व्यवस्था करेगा में उसका दासानुदास रहूँगा।
- दिल्ली के लाल मंदिर बनाने वाले महानुभाव ने मंदिर पूरा बनाने के बाद भी कही नाम तक नहीं लिखा।

निवेदक : रोहित जैन सी.ए. मंडला (म.प्र.)
आकृति बीना मो.: 9981331700

दान की महिमा

- धन के देने से गौरव प्राप्त होता है संग्रह से नीचे मेघों की उच्च स्थिति देने से है और समुद्र की नीचे स्थिति संग्रह से हैं।
- कंजूस धन का दान नहीं करता है वह छोड़ जाता है तो दूसरे उसका उपयोग करते हैं।
- धन के चार उत्तराधिकारी हैं – १. धर्म २. चोर ३. अग्नि ४. राजा इनमें धर्म का अपमान होने पर आदर से सहित शेष तीन पुरुष पर कुपित हो जाते है।
- धन त्याग से शोभित होता है। प्रतिष्ठा धन की नहीं त्याग की होती है। त्याग अवगुणों का नाश करने वाला है। दान देने वाले का हृदय विशाल होता है। पुण्य से कमाओ और पुण्य में लगाओ।
- सूर्य किरणों को त्याग करके लोक को प्रकाशित करता है।
- मनुष्य लेना तो जानता है और देने में संकोच करता है।
- अनादिकाल से संचय किये हुए पापों को नाश करने के लिए सर्वोत्तम माध्यम दान है।
- धन की गति ३ होती है – दान, भोग, नाश। दान देने से कभी कोई गरीब नहीं हुआ।
- उत्कृष्ट २५ प्रतिशत, मध्यम १७ प्रतिशत जघन्य १० प्रतिशत दान अपनी, दान का सीधा मतलब है अपने तन, मन और धन से औरो की सहायता करना।
- पेड़ फलों का त्याग करते हैं, बादल जल का त्याग करते हैं, पर्वत पत्थर का त्याग करते हैं। त्याग अवगुणों का नाश करने वाला है।
- वह स्वर्ग में ऊँचा स्थान पाता है जो अधिक धन नहीं होने पर भी दान देता है।
- दान विघ्नों का नाश करने वाला है शत्रुओं का बैर दूर करने वाला है। पुण्य का उपादान है तथा बहुत भारी यश का कारण है।(पद्मपुराण)
- दान देने से धन, मन, तन और जीवन सफल होता है। धन की यदि अच्छी गति है तो केवल दान ही है।
- जो मनुष्य अपने बढ़ते हुए धन को सर्वदा धर्म के कार्यों में देता है, उसका धन सदा सफल है।
- धन को गाड़कर रखने की अपेक्षा दान देकर धन गाढ़ा करो।
- दान से इंसान का नसीब खुलता है पुण्य का संचय होता है।
- दान देने की विशुद्धि से तीर्थंकर प्रकृति का बंध भी हो सकता है।
- देन हार कोई और है, देता है दिन रैन। लोग भरम मुझ पर करें, तातें नीचे नैन॥
- पानी बढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम। दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥
- बिन मांगे दे दूध बराबर मांगे दे सो पानी। वह देना है खून बराबर जामें खेंचा तानी॥
- मर जाऊँ माँगू नहिं अपने तन के काज। पर स्वारथ के कारणे मोह न आवे लाज॥
- दान देने से पूरी दुनिया में यश कीर्ति फैलती है। लोगों में चर्चा होती है। परिग्रह कम होता है।
- दान दिये बिना सोना नहीं और दान देकर रोना नहीं।
- मान नहीं माया नहीं, नहीं नाम की चाह। वह नर नारी दान भंडार में डाले द्रव्य अपार॥
- सैकड़ों मनुष्यों में एक मनुष्य वीर होता है, हजारों में एक विद्वान पंडित तथा लाखों में एक वक्ता और दाता करोड़ों में एक मिलता है।

निवेदक : रोहित जैन सी.ए. मंडला (म.प्र.)

आकृति बीना मो.: 9981331700